श्रेष्ठ कर्मो की खेती किजिए

महाभारत के युद्ध भूमि में अर्जुन को मोह उत्पन्न होने पर कर्मों की गहन गति से अवगत कराते हुए श्रीकृष्ण ने स्पष्ट रूप से बताया है कि यह जीवन एक कर्म क्षेत्र है। वास्तव में मनुष्य का जीवन एक खेत है। इसमें दीर्घावधि तक संकल्पों रूपी बीज बोने से कर्म, अकर्म, विकर्म और सुकर्म की फल प्राप्ति होती है। इसलिए कहा गया है कि जैसा बोओगे वैसा काटोगे अर्थात जैसा करेंगे वैसा पायेगे, यह अटल सत्य है। मनुष्य का जीवन एक नन्हें से पौधे के रूप में प्रारम्भ होता है और एक विशाल वृक्ष की भांति बड़ा होता है और उससे निकलने वाले फूल और फल से उसकी आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक समृद्धि प्राप्त होती है। मनुष्य जिस प्रकार का संकल्प रूपी बीज बोता है उसी अनुरूप फल की प्राप्ति होती है। इसमें उत्तम, कनिष्ठता प्रतिपादित होती है। आज मनुष्य सोचता कुछ और है, होता कुछ और है। इसका कारण यही है कि जिस विधि-विधान से श्रेष्ठ कर्मों की खेती होनी चाहिए वो समुचित ढंग से नहीं कर पा रहा है। जैसे एक बंजर भूमि में फसल बोने के लिए हल चलाने की आवश्यकता है इसी तरह जीवन रूपी धरनी में ईश्वरीय ज्ञान हल चलाना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर शुद्ध और श्रेष्ठ संकल्प रूपी उन्नत बीज को ही अपने अन्दर स्थान देना चाहिए। ज्ञान सूर्य परमात्माा की प्रकाश, पानी के रूप में नियमित ज्ञान स्नान व आध्यात्मिक चिन्तन, इसको पोषण प्राप्त कराने के लिए तन, मन, धन से ईश्वरीय सेवा रूपी उर्वरक देना चाहिए जिससे उचित श्रेष्ठ संकल्पों का बीज एक स्वस्थ पौधे के रूप में अंकुरित हो सके। जिस प्रकार से फसल उग आने पर उसकी पूर्ण सुरक्षा के लिए कीड़ों मकोड़ो से बचाने के लिए रासायनिक दवाओं को उपयोग करते है तथा घास-फूस के रूप में अवांछनीय पौधे से निराई-गुणाई की आवश्यकता पड़ती है। उसी प्रकार से संग-दोष, अवगुणों, विकारों से बचाने के लिए अटेन्शन रूपी पहरा देना चाहिए जिसे अनावश्यक विचार बुराई के रूप में न पनपे।

जब हम ईश्वरीय कायदे के अनुसार अपने जीवन को ज्ञान जल से सिंचित करते है तो इन सारी प्रक्रियाओं के बाद हमारे अन्दर प्रेम, आनन्द, सत्यता, दिव्यता, मधुरता, पवित्रता, निरंहकारिता जैसे दिव्यगुणों रूपी फूल खिलते है, जो सारे जहाँ को सुवासित करते है। इसका फल यश और मान के रूप में प्राप्त होता है। लोगों से मिलने वाली दुआयें भण्डारण के रूप में इकट्ठा होती है जो विकट परिस्थितियों में काम आती है। फसलों की पैदावार की तरह इस आध्यात्मिक सम्पदा को बाजार में बेचने की जरूरत नहीं होती है। यह ऐसा फल होता है जिसको जितना बांटेंगे उतना बढ़ता जायेगा। गुणों और शक्तियों रूपी खजाना चाहे आप बांटें या न बांटे परन्तु लोगों को अपने आप मिलता रहता है। स्वयं को साथ-साथ दूसरों को भी सुख प्रदान करता है। ऐसे दिव्य गुणों से सम्पन्न लोगों के आस-पास आने वाले लोगों को भी शान्ति और सुख प्रदान होती रहती है। जब आप किसी को स्नेह देगें तो आप को भी स्नेह मिलेगा। सुख देगें तो सुख मिलेगा। जो आप देगें उसके बदले में आप को भी किसी न किसी रूप से वही प्राप्त होगा। यह प्रकृति का नियम है। पिछले जन्मों के कर्मों के सिद्धांत भी वर्तमान जन्म में प्रभावी होते है।

एक बार एक व्यक्ति था जो बहुत ही धनवान था लेकिन धन की प्राप्ति के साथ-साथ उसको इतनी शारीरिक बिमारियां थी कि वह इससे बहुत त्रस्त था। वह अच्छी तरह से न तो खा पाता था और न हीं अच्छी तरह से सो पाता था। वह इतना होते हुए भी बहुत दान पुण्य करता था सदा दूसरों की भलाई करता

था। फिर भी उसको बिमारी के रूप में कष्ट झेलने पड़ते थे। उसके भेंट में बुरे कर्म करने वाले बड़े सुखी और खुश दिखाई प्रतीत होते थे।

यह सब दृश्य देवताये स्वर्ग लोक से देख रहे थे। उन्होंने धर्मराज से पूछा कि महाराज आपके दरबार में अन्याय हो रहा है जो पुण्य कर रहा है उसको दु:ख मिल रहा है और जो पाप कर रहा है उसको सुख मिल रहा है। इस पर धर्मराज ने उत्तर दिया कि ऐसा तो कभी हमारे दरबार में अनदेखी होती नहीं है फिर भी हम इसका अवलोकन करते हैं। उन्होंने अपने कुबेर को बुलाया और कहा कि देखो भाई यह कैसा खेल चल रहा है। जब कुबेर दोनों के कर्मों के खाते देखे तो जो इस समय धनवान था और वह पुण्य कर्म करने के बाद भी शारीरिक बिमारियों से दुखी था वह पिछले जन्म में बहुत धन दान किया था परन्तु उसने पाप बहुत किये थे दूसरों को बहुत दु:ख दिये थे इसलिए इस जन्म में पुण्य करने के बाद भी उसको भारी सजा मिलनी थी लेकिन पुण्य कर्म के कारण थोड़ी शारीरिक कष्ट के रूप में चुकतू हो रहा था। परन्तु जो पाप करके सुखी था वह पिछले जन्म में इतना पुण्य कर्म किया था कि उसके फल में उसको बहुत धनवान तथा धर्मात्मा बनना चाहिए था परन्तु वह अपने लक्ष्य से विचलित हो गया और वह पाप करने लगा जो इस समय पाप करने पर भी उसको प्राप्त हो रहा था।

कहने का ताप्पर्य यह है कि हमारे इस जन्म की अधिकतर प्रक्रिया सुख और दु:ख पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से संचालित होती है। कर्मों की बहुत ही गहन गति है। संकल्प, बोल और कर्म -बीज, फूल तथा फल के रूप में है। कर्म के पहले मन में संकल्प उत्पन्न होता है, वह संकल्प वाणी द्वारा व्यक्त होता है फिर वह कर्म में आता है। इसलिए संकल्प बीज का काम करता है, बोल फूल और कर्म द्वारा फल मिलता है। हर सेकेण्ड में कर्मों का लेखा-जोखा बनता है। इसलिए हमें इस कर्म क्षेत्र में सफल और सदा उत्तरोत्तर बढ़ने के लिए कर्मों के सूक्ष्म ज्ञान का होना अति आवश्यक है। बाग-बगीचों तथा फसलों की देख-रेख करने वाला कोई न कोई बागवान होता है। परन्तु मानव जीवन रूपी बगिया का बागवान सिर्फ परमात्मा है क्योंकि संसार में जितनी कलमें लगायी गयी है सबका जन्मदाता परमात्मा है। इसलिए हमें अपने अन्दर सुन्दर दिव्य गुण रूपी फूलों को बढ़ाने के लिए हमेशा केवल सर्वगुणों के सागर परमात्मा को ही देखना चाहिए तथा उसे ही फालो करना चाहिए। मनुष्य को फालो करने पर हम कभी रास्ता भटक भी सकते है परन्तु परमात्मा को फालो करने पर हम सदा सद्गुणों से भरपूर होते जायेंगे। इतना जरूर है कि हम दूसरों को सकारात्मक और कल्याणकारी प्रेरणा दे सकते है। परमात्मा ही कर्मों की खेती के रहस्यों को अच्छी तरह से जानते है तथा वैसा करने के लिए प्रेरित करते है। इसलिए हमें भोलेनाथ परमात्मा को ही अपना बागवान स्वीकार किजिए तथा श्रेष्ठ कर्मों की खेती करके दिव्य गुणों के फूलों से अपने जीवन को महकाईये।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com